आपने लिखा

पत्रिका का मुखावरण देखकर यह कतई नहीं लगा कि ये पौधों के चित्र हैं पर किशोर पंवार ने बहुत ही उत्कृष्ट लेख प्रस्तुत किया। आज तक स्कूली पुस्तकों में विभिन्न प्रकार के कैक्टस एवं ग्वार पाठा व झाड़ियों के बारे में तो पढ़ा था परन्तु इन 'केम' पौधों के बारे में पहली बार जाना। इसके लिए पंवार साहब को धन्यवाद। हालांकि मैं जिस जगह का निवासी हूं वह भी रेगिस्थान (मरुस्थल) का ही एक हिस्सा है, परन्तु हमारे यहां ऐसे पौधे नहीं होते।

जयश्री सुब्रह्मण्यन का लेख 'शून्य + शुन्य...' बड़े सही समय पर पढ़ने को मिला क्योंकि मैं भी पहली बार कक्षा तीसरी से पांचवीं को भिन्न संख्याओं का प्रकरण पढ़ा रहा था। हालांकि मैंने विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री जैसे कागज़, रोटी, गत्ता आदि की सहायता से $^1/_2$, $^3/_4$, $^1/_4$ को तो आसानी से समझा दिया परन्तु $^2/_3$व $^3/_2$ को बताते हुए कुछ चक्कर पड़ गया।

मैंने शायद शुरुआत ही गलत कर दी। मैंने $^1/_2$ को बताया कि वस्तु एक टुकड़े 2, $^1/_4$ को बताया वस्तु एक टुकड़े 4। यानी अंश को वस्तु बता दिया व हर को उसका एक टुकड़ा। जब $^2/_3$ के बारे में बताने लगा कि वस्तु 2 टुकड़े ले लिए 3, तब मुझे भ्रम हुआ कि शायद मैं खुद ही कहीं फंस गया हूं क्योंकि यहां वस्तु कोई सी भी नहीं वरन दोनों ही वस्तु के टुकड़े हैं यानी $^3/_4$ में किसी के कुल टुकड़े किए 4 उसमें से ले लिए 3, $^2/_3$ यानी कि टुकड़े किए 3 ले लिए 2

पर अब मुझे लगा कि बच्चों को भी चक्कर पड़ गया कि गुरूजी पहले 'हर' को पकड़ रहे हैं बाद में अंश को जबकि अंश ऊपर होता है 'हर' नीचे।

मुझे बड़ी झुंझलाइट हुई कि मैं तो सारा ही गड्डमड्ड हो गया। फिर मैंने रेखा-चित्रों की सहायता से समझाया तो $^2/_3$ व $^3/_2$ में फिर चक्कर पड़ रहा था। कुछ बच्चे $^2/_3$ को $^3/_2$ बोल रहे थे क्योंकि शायद वो सोच रहे थे कि 2 में से तो 3 ले नहीं सकते, हां 3 में से 2 ज़रूर लिया जा सकता है। बस तर्क मेरे किए-कराए पर पानी फेर रहा था। लेकिन जब मैंने इन दोनों भिन्नों के अलग-अलग रेखाचित्र एक साथ ही बनाकर दिखाए व कागज़ों के टुकड़ों के द्वारा समझाया तब सभी ने सही-सही भिन्नों को बता दिया।

लेकिन मुझे लग रहा था कि शायद अवधारणात्मक रूप से मैं अभी भी यह समझ नहीं पाया हूं। कृपया मेरी सहायता करें। जयश्री के लेख से मुझे सहानुभूति तो ज़रूर हुई पर सहारा नहीं मिला।

अन्य लेखों में 'मेरा विद्यालय' एवं 'एक अकादमी के लिए रपट' भी सराहनीय थे।

रमेश जांगिड़, शिक्षक
भादरा, ज़िला हनुमानगढ़, राजस्थान

मैंने हाल ही में सन्दर्भ अंक 55 में छपा राजश्री राजगोपाल का लेख 'डायोड,

ट्रांज़िस्टर एवं परिपथ' पढ़ा। बेहद उपयोगी लगा। क्या डायोड, ट्रांज़िस्टर एवं परिपथ पर हिन्दी में विस्तृत सामग्री आपके यहां उपलब्ध है? यदि हां, तो कृपया सूचित करें, मैं तत्काल मंगाना चाहता हूं।

विवेक बाझल
बरगी नगर, जबलपुर, म. प्र.

शैक्षणिक संदर्भ का मैं अनजान-सा पाठक रहा हूं। इब्तिदा संस्था में शिक्षक व समन्वय सहायक का काम करते हुए संदर्भ से लगातार जुड़ा रहा। पिछले चार वर्षों से संदर्भ पढ़ता रहा हूं, पुराने अंक भी पढ़ डाले।

संदर्भ की भाषाई सहजता व विविधता आकर्षित करती है। बच्चों के साथ हुए काम व अनुभव भी हर बार पढ़ने को मिलते रहे हैं। नवीनतम व पिछला अंक कुछ भारी महसूस हुए।

दिलिप चुघ
अलवर, राजस्थान

एकलव्य द्वारा प्रकाशित नियमित पत्रिकाएं

संदर्भ
स्रोत
चकमक

इन पत्रिकाओं के सदस्यता शुल्क, पुराने अंक, बाउंड वॉल्यूम के बारे में जानकारी हेतु संपर्क कीजिए।

एकलव्य, ई-7/ एच. आई. जी. 453,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
फोन : 0755 - 2464824, 2463380
bhopal@eklavya.in